लोकशाही और पक्षपद्धति

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १९ | सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई | अंक ९

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-१४

अहमदाबाद, शनिवार, ता० ३० अप्रैल, १९५५

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

आअिन्स्टीन

१८ अप्रैल, १९५५ के दिन आधुनिक जगत्के सबसे बड़े गणितशास्त्री और पदार्थविज्ञान शास्त्री डॉ० अेल्बर्ट आअिन्स्टीनका अपने नये अपनाये हुअे शहर प्रिन्सटोन (न्यूजर्सी, अमेरिका)के नर्सिंग होममें देहावसान हो गया। महान् विज्ञानवेत्ता कुछ दिन पहले ही अेक बीमारीके कारण, जो अुनके डॉक्टरोंकी रायमें बहुत गंभीर नहीं थी, अस्पतालमें भरती हुअे थे। अिसलिअे अुनकी मृत्यु अकस्मात् ही हो गअी; यहां तक कि अुनके मित्रोंको भी अुसका पता नहीं था। जैसा कि पत्रोंसे मालूम हुआ है, अुनकी मृत्युके समय केवल अेक नर्स ही अुनके पास थी। अुनकी पुत्री अुस समय अुसी अस्पतालके दूसरे अेक भागमें थी और 'साअिटिका' का अिलाज करा रही थी। अुनकी आकस्मिक मृत्युकी खबर सुनकर सारी दुनिया आश्चर्यमें डूब गअी।

१४ मार्च, १८७९ को जर्मनीमें अुनका जन्म हुआ था। बचपनसे ही अुन्होंने गणितके विषयमें अपनी सहज योग्यताओंका परिचय दिया था, जिन योग्यताओंसे अुन्होंने अपने बादके जीवनमें दुनियाको आश्चर्यचकित कर दिया था। अुन्होंने अपना सारा जीवन अपने प्रिय विषयोंके अध्ययनमें ही व्यतीत किया, और अिजराअिलके प्रथम प्रेसिडेन्ट वीझमनकी मृत्युके बाद अुसके सभापतिका महान् पद ग्रहण करनेसे भी अिनकार कर दिया। जैसा कि हम जानते हैं, यहूदी होनेके कारण अुन्हें अपने वतन जर्मनीमें हिटलरके शासनकालमें बड़ा कष्ट अुठाना पड़ा। अुन्हें १९३३ में नाजियोंके हाथमें अपना घरबार और सारी जायदाद छोड़कर जर्मनीसे भागना पड़ा था। अुस समय तक वे अपने सापेक्षवादके महान् सिद्धान्तके लिअे (१९०५) जगविख्यात हो चुके थे, १९२१ में विज्ञानके लिअे अुन्हें नोबल पुरस्कार मिल चुका था और विज्ञान-जगत् द्वारा अन्य कअी प्रकारके सम्मानोंसे विभूषित किये जा चुके थे। लेकिन यह सब अुन्हें नाजियोंके अत्याचारोंसे बचा नहीं सका। अुन्होंने न केवल अिस महान् वैज्ञानिकको देशसे ही निकाला, बल्कि अुनके सिरके लिअे २०,००० मार्कका पुरस्कार घोषित किया था।

आअिन्स्टीन केवल अेक वैज्ञानिक ही नहीं थे; वे बड़े मानवतावादी तथा शांति और मानव-स्वातंत्र्यके पक्के पुजारी थे। व्यक्ति-स्वातंत्र्य अुन्हें बहुत प्रिय था, जो मनुष्यके गौरव और प्रतिष्ठाका सूचक है और मनुष्यके योग्य किसी भी प्रगतिकी अेकमात्र गारंटी है। अिस स्वतंत्रताकी आवश्यकताके प्रति वे अितने जाग्रत थे कि अुन्होंने अेक बार कहा था, "जहां तक मेरा वश चलेगा, मैं अैसे ही देशमें रहूंगा जहां राजनीतिक स्वतंत्रता, सहिष्णुता और कानूनकी दृष्टिमें सारे नागरिकोंकी समानताका साम्राज्य होगा।" अभी कुछ समयसे अमेरिकामें जब कम्युनिस्ट विरोधी जनून बढ़ा, तब जर्मनीसे भागकर आये हुअे अिस महान् निराश्रित वैज्ञानिकने अुसके खिलाफ आवाज अुठाअी, और अुन लोगोंका समर्थन किया जिन्हें अपने प्रामाणिक विश्वासके लिअे सताया जाता था। वे जीवनकी कदर करते थे और नास्तिक होते हुअे भी नम्र तथा धार्मिक थे और सर्वोच्च शक्तिमें विश्वास रखते थे। यह विश्वास अुनमें अपने वैज्ञानिक अध्ययनके जरिये पैदा हुआ था। यह अध्ययन अुतना ही बुनियादी और मौलिक था, जितनी कि भौतिक विश्वके आधारके लिअे अुनकी खोज। अिस विशाल अनुसंधानके लिअे अुनका साधन था शुद्ध गणितशास्त्र। और अुन्होंने दुनियाको पदार्थ और शक्तिके स्वरूपके विषयमें अेक सिद्धान्त दिया, जैसे कि वे देश और समयके तीन परिमाणोंमें साथ-साथ काम करते दिखाअी देते हैं। कल्पनाकी अेक विशाल अुड़ानमें अुन्होंने संपूर्ण दृश्य जगत्को — पदार्थ, शक्ति, निश्चलता, गति, देश, समय वगैराको — अपने अध्ययनका अेक समग्र विषय बना लिया और हमें भौतिक जगत्का अेक सम्बद्ध सिद्धान्त, अुसका भूमितिशास्त्र और पदार्थविज्ञान, दिया। यह अेक अैसा कार्य है, जिसकी तुलना भारतीय सांख्यों और वैशेषिकोंके कार्यसे की जा सकती है, जिन्होंने भौतिक सृष्टिका विश्लेषण करके अुसकी मूलभूत श्रेणियां बनाअीं और अन्तमें अेक अलौकिक शक्तिकी सूचना की जिसका और अधिक विश्लेषण नहीं हो सकता। आअिन्स्टीनने अपने अैसे आन्तरिक अनुभवका वर्णन अिन शब्दोंमें किया है:

> "सबसे सुन्दर और सबसे गहरे जिस भावका हम अनुभव कर सकते हैं, वह है गूढ़ताका बोध। वह समस्त सच्चे विज्ञानकी शक्ति है। जिसे अिस भावका परिचय नहीं है, जो आश्चर्यमें नहीं डूब सकता और भयसे अभिभूत नहीं हो सकता, वह मृतवत् है। यह ज्ञान कि जो हमारे लिअे अगम्य है अुसका दरअसल अस्तित्व है, वह अपने-आपको सर्वोच्च बुद्धिमताके रूपमें और अत्यंत प्रकाशमान् सौन्दर्यके रूपमें प्रकट करता है — जिन्हें हमारी प्राकृत मानसिक शक्तियां केवल अुनके साधारणसे साधारण रूपोंमें समझ सकती हैं, — यह भावना सच्ची धार्मिकताका केन्द्र है।"

अिसलिअे अुन्होंने अेक बार घोषणा की थी कि,

> "ब्रह्माण्डका धार्मिक अनुभव वैज्ञानिक शोधका दृढ़से दृढ़ और अुदात्तसे अुदात्त मुख्य स्रोत है।" "मेरा धर्म अुस असीम सर्वोच्च शक्तिकी नम्र प्रशंसामें समाया हुआ है, जो अपने-आपको अैसी छोटी तफसीलोंमें प्रकट करती है, जिन्हें हम अपनी अशक्त और निर्बल बुद्धिसे देख-समझ सकते हैं। सर्वोच्च विवेकपूर्ण शक्तिके अस्तित्वमें, जो अगम्य और अचिन्त्य ब्रह्माण्डके रूपमें प्रकट होती है, मेरा जो गहरा भावनापूर्ण विश्वास है अुसीमें मेरी अीश्वर-विषयक कल्पना समाअी हुअी है।"

अिसलिअे अुन्होंने कहा था:

"मेरा विश्वास स्पिनोझाके अीश्वरमें है, जो समस्त मानवोंके बीचके सुमेल और समन्वयके रूपमें अपने-आपको प्रकट करता है, न कि अुस अीश्वरमें जो मनुष्यके कार्य और भाग्यकी चिन्ता करता है।"

सर्वोच्च शक्ति और जीवनके गहनतम सत्यके अिस प्रत्यक्ष अनुभवने ही अिस महान् वैज्ञानिकको मानवप्रेमी और दुनियामें शान्ति चाहनेवाला बनाया।

जैसा कि दुनिया जानती है, पदार्थ-शक्ति-सम्बन्धके अुनके गणितशास्त्रके सिद्धान्तने ही अुनके मनमें यह भव्य कल्पना — नहीं विश्वास, अुत्पन्न किया कि अणुके टुकड़े किये जा सकते हैं। लेकिन आअिन्स्टीन अिस दिशामें आगे नहीं बढ़े। और जब लड़ाअी करनेवाली दुनियाने अुनकी अिस गणितशास्त्र सम्बन्धी भव्य कल्पनाका मानव-संहारके दुष्ट प्रयोजनके लिअे अुपयोग करना शुरू किया, तो अुन्होंने हमेशा अिसका विरोध किया और अपने महान् वैज्ञानिक मस्तिष्ककी अीश्वरदत्त शक्तिका अिस कामको आगे बढ़ानेमें दुरुपयोग नहीं किया। महान् वैज्ञानिक-मानवतावादीके अिस अुदात्त गुणने ही अुन्हें गांधीजी और भारतको अितना अधिक प्रेम करनेवाला बनाया। हम जानते हैं कि गांधीजीके अिस दुनियासे चल बसने पर अुन्होंने कैसे भावभीने शब्दोंमें अपनी श्रद्धांजलि अर्पण की थी। जवाहरलालजी विश्वशान्तिके लिअे जो कार्य करते हैं, अुसकी वे हृदयसे प्रशंसा करते थे और अुनकी पूर्ण सफलताकी कामना करते थे। वे सच्चे ज्ञानी थे, जो तड़क-भड़कसे दूर रहते थे और सादा जीवन बिता कर विश्वके स्वरूप और अुसके गूढ़ रहस्योंके गहन चिन्तनमें तल्लीन रहते थे। अुसी चिन्तनके फलस्वरूप वे दुनियाको बता सके कि आश्चर्य-जनक अणुमें कुदरतने जो विराट शक्ति छिपा रखी है अुसे मुक्त किया जा सकता है। जैसा कि अेक लेखक 'हिन्दू' (२० अप्रैल, १९५५) में कहते हैं:

"यह दुर्भाग्यकी बात है कि जो आअिन्स्टीन महात्मा गांधी जैसे ही अत्यन्त शान्तिप्रेमी थे, अुन्हें ही भयंकर अणुबमके निर्माण चक्रको गति प्रदान करनेके लिअे जिम्मेदार बनना पड़ा। प्रेसिडेन्ट रूज़वेल्टको अगस्त १९३९ में लिखे अपने पत्रमें अुन्होंने यह चेतावनी दी थी कि अणु सम्बन्धी खोज अैसी मंजिल पर पहुंच गअी है, जब अणुबम बनाया जा सकता है और जर्मनी अिस क्षेत्रमें दूसरे देशोंसे अितना आगे बढ़ा हुआ है कि संभवतः नाजी जल्दी ही अणुबम बना सकेंगे। अुस पत्रसे रूज़वेल्टको कार्यकी प्रेरणा मिली जिसके फलस्वरूप वह अणुबम बना जो जापान पर गिराया गया। जीवनके अन्तिम दिन तक आअिन्स्टीन अिस कृत्यके निमित्त बनने और अणुका रहस्य मनुष्यको बतानेके लिअे पश्चात्ताप करते रहे। यह देखकर अुन्हें बड़ा आघात लगा कि अणु-शक्ति मनुष्य-जातिके लिअे वरदान बननेके बजाय भयंकर अभिशाप सिद्ध हुअी है।"

लेकिन वे अिससे ज्यादा कुछ नहीं कर सके। जिस शक्तिको अुन्होंने पहले-पहल अणुबममें छिपा देखा था, अुसकी दौड़ शुरू हो गअी है और अुसने भयंकर रूप ग्रहण कर लिया है। आम तौर पर सारी दुनिया और खास तौर पर अमेरिका अणुशक्तिके अैसे अुपयोगसे, जो अुसका आविष्कारक नहीं चाहता था, अिनकार करके ही अिस शान्तिप्रिय वैज्ञानिकको अपनी श्रद्धांजलि अर्पण कर सकता है। आअिन्स्टीन मानते थे कि दूसरे देश अैसा न करें तो भी अमेरिकाको अणुशक्तिका संहारक अुपयोग बन्द कर देना चाहिये, जैसा कि श्री राजाजी बिना किसी परिणामके अमरीकी जगत्‌को अिकतरफा कदम अुठानेके लिअे कहते रहते हैं। भगवान् अिस महान् शांतिवादी वैज्ञानिककी आत्माको शांति प्रदान करे!

२५-४-'५५ मगनभाई देसाई

(अंग्रेजीसे)

माध्यमिक शिक्षा

दी बाम्बे स्टेट फेडरेशन ऑफ हेडमास्टर्स अेसोसियेशन्स, दी बाम्बे स्टेट फेडरेशन ऑफ सेकन्डरी टीचर्स अेसोसियेशन्स, दी बाम्बे हेडमास्टर्स अेसोसियेशन, और दी ग्रेटर बाम्बे सेकन्डरी टीचर्स अेसोसियेशन — अिन संस्थाओंके प्रतिनिधियोंने अभी अेक प्रेस-कान्फरेन्समें जो कुछ कहा, अेक पाठकने अुसकी रिपोर्टका अेक अंश मुझे भेजा है और आग्रह किया है कि मैं अुस पर अपने विचार प्रगट करूं। भेजा हुआ अंश अिस प्रकार है:

"श्री बी० जी० खेरके कार्यकालमें हमारी शिक्षा-व्यवस्थामें कुछ दूरगामी और शिक्षाकी दृष्टिसे बहुत समुचित परिवर्तन किये गये थे। अैसा अेक परिवर्तन अेस० अेस० सी० अी० बोर्डकी स्थापना थी। अुसका अुद्देश्य यह था कि परीक्षाके लिअे काफी विभिन्न अनेक विषय रखे जायं जिससे कि विद्यार्थी अपनी रुचि और वृत्तिके अनुसार विषयोंका चुनाव कर सकें। अुसका नतीजा यह हुआ कि विश्व-विद्यालयमें न पढ़ाये जानेवाले विषय चुननेवाले लड़कोंकी संख्या लगातार बढ़ती गअी। अुन्हें अेस० अेस० सी० की परीक्षाके लिअे दो अनिवार्य विषय लेने पड़ते थे और फिर करीब छांसठ विषयोंमें से पांच अैच्छिक विषय चुनने पड़ते थे। यह बात सन् १९४९ की है।

"सन् १९५२ में नया शासन शुरू होने पर सरकारने पहले तो यह चाहा कि छह विषय अनिवार्य रहें और अेक विषय अैच्छिक रहे। लेकिन जब चारों ओरसे विरोध हुआ तो अुन्होंने यह अिरादा छोड़ दिया; फिर भी अेस० अेस० सी० अी० बोर्डको यह माननेके लिअे राजी किया गया कि दो विषय अेकदम अनिवार्य रह, तीन निर्दिष्ट विषयोंमें से दो और चुने जायं, और बाकीमें से तीन और चुने जायं। जाहिर है कि अिस तरह प्रगतिकी घड़ीका कांटा अुलटी दिशामें घुमाया गया है।

"नये शासनमें अेक दूसरा परिवर्तन पाठ्यक्रममें किया गया। हर विषयका पाठ्यक्रम अिस तरह बदला गया कि कोअी अेक पाठ्य-वस्तु जगह-जगह बार-बार न आये, अिसके सिवा अुसकी रचना समकेन्द्र पद्धतिके अनुसार की गयी। बेशक वह कुछ विषयोंमें जितना चाहिये, अुससे बहुत ज्यादा था और अुसमें काट-छांटकी जरूरत थी। अब न केवल सब विषयोंके लिअे और सारी कक्षाओंके लिअे नये पाठ्यक्रम होंगे, बल्कि कुछ नये विषय भी होंगे; जैसे सामान्य विज्ञान जिसमें दुनियाके सारे विज्ञान-शास्त्रोंकी जानकारीका समावेश होगा, और सामाजिक विज्ञान यानी अितिहास, भूगोल और नागरिक शास्त्र। और अिन विषयोंको शिक्षकोंको ११ वीं कक्षामें बिना पाठ्य-पुस्तकोंके पढ़ाना होगा, क्योंकि अिस कक्षाके लिअे अिन विषयोंकी पाठ्य-पुस्तकें जून १९५५ तक तैयार नहीं हो सकतीं और सरकार १९५६ तक ठहर नहीं सकती।

"और सरकारने हेडमास्टरोंका बोझ कम करनेके लिअे हर विषयकी पढ़ाअीके पीरियडोंकी संख्या तय कर दी है

और हरअेक पीरियडका समय-मान भी निश्चित कर दिया है। अगर कोअी हेडमास्टर अिस योजनाके पालनमें कहीं कोअी फर्क करेगा, तो अुसके स्कूलको मिलनेवाली ग्रान्टमें कमी करके अुसे दण्ड दिया जायगा। मजा यह है कि जब अिस सारी चीज पर अंतिम निर्णय किया गया, तब शिक्षकों या हेड-मास्टरोंकी परिषदोंके किसी प्रतिनिधिकी कोअी सलाह नहीं ली गयी।"

अेस० अेस० सी० परीक्षा और हाअीस्कूलकी दूसरी कक्षाओंके पाठ्यक्रम और नियमादिकी मुझे अद्यतन जानकारी नहीं है। अैसा मालूम होता है कि सारी चीज परिवर्तनकी अवस्थासे गुजर रही है। लेकिन जितना जानता हूं और मित्रोंसे जो मालूम होता रहता है, अुससे यह खयाल अवश्य बनता है कि जो कुछ चल रहा है अुसमें कहीं गंभीर गड़बड़ है और स्कूली दुनिया अुससे संतुष्ट नहीं है। अुदाहरणके लिअे, निर्दिष्ट विषयोंके लिअे घंटोंके बंटवारेकी बात लीजिये। मेरी समझमें नहीं आता कि अिस बातको अूपरसे क्यों थोपा जाना चाहिये, और, जैसा कि अुपरोक्त अंशमें अुल्लेख हुआ है, अुसके साथ ग्रान्ट कम करनेके दण्डकी धमकी क्यों होना चाहिये? अगर अिसकी जरूरत महसूस होती हो, तो सुझावके तौर पर यह कहा जाय कि घंटोंका आदर्श बंटवारा यह होगा और हेडमास्टरोंको अुसे स्थानीय आवश्यकताओं या विद्यार्थियोंकी जरूरतके अनुसार बदलनेकी आजादी दी जाय।

ग्रान्टमें कमी करनेकी धमकियोंके साथ — जो मुझे बताया गया है आजकल बड़ी सामान्य बात बनती जा रही है — अिस तरह नियमोंको अूपरसे लादनेकी प्रवृत्ति मनको बहुत अरुचिकर मालूम होती है। शिक्षाके क्षेत्रमें तो यह और भी अरुचिकर है।

श्री खेरके समयमें विविध शैक्षणिक समितियोंके जरिये गैर-सरकारी शिक्षाकारोंके साथ संपर्क साधनेकी बड़ी अच्छी प्रथा शुरू हुअी थी। ये समितियां शिक्षा-कार्यको व्यवस्थित कैसे किया जाय, अिस प्रश्न पर विचार करती रहती थीं और सरकारको कार्यक्रम सुझाती थीं। खेद है कि आजकल अुनका काम बन्द पड़ा है।

अब यह भी जरूरी हो गया है कि माध्यमिक शिक्षाको कक्षा ८ से कक्षा ११ तक अुत्तर-बुनियादी तालीम माना जाय, अिस दृष्टिसे अुस पर विचार किया जाय और तदनुसार अुसकी पाठ्यवस्तु और व्यवस्थामें सुधार किये जायं। बम्बअी राज्यमें यह चीज शुरू हो गयी थी, लेकिन अब वह रोक दी गअी मालूम होती है। साथ ही राज्य भरमें प्राथमिक कक्षाओंमें बुनियादी तालीमके विस्तार और अमलका कार्यक्रम भी रुका पड़ा है। अिसलिअे मेरा खयाल है कि शिक्षकको और औसत नागरिकको जो मुश्किल महसूस हो रही है, वह यह है कि सरकार समय समय पर जो सूचनायें, आदेश और स्पष्टीकरण आदि निकालती रहती है, अुनसे नयी शिक्षा-व्यवस्थाकी कोअी स्पष्ट तसवीर बनती नजर नहीं आती। यह तसवीर अैसी होनी चाहिये कि कक्षा १ से लगाकर ११ तकके सारे विद्यार्थियोंके लिअे बुनियादी तालीमकी सुदृढ़ राष्ट्रीय प्रणालीकी रचना करनेके लिअे जिस प्रगतिशील नीतिकी आवश्यकता है, वह नीति अुस तसवीरमें दिखे। अिसके लिअे यह जरूरी है कि शिक्षक अपने क्षेत्रमें काम करनेमें अपनेको आजाद महसूस करें और सरकारी शिक्षा-निरीक्षणका काम अधिकाधिक शैक्षणिक और सर्जनात्मक हो। आजकी तरह ग्रान्ट कम करनेकी धमकीसे सुसज्ज शासकीय स्वरूपवाला न हो।

२१-४-'५५ मगनभाई देसाई

(अंग्रेजीसे)

अ० भा० सर्व-सेवा-संघका बेदखली संबंधी प्रस्ताव

पिछले दिनों देशके कअी हिस्सोंमें जमीन पर काश्त करनेवाले किसानों और बटाअीदारोंकी जो बेदखलियां शुरू हुअी हैं, अुन पर अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ चिन्ता और खेद प्रगट करता है। वस्तुतः न्यायोचित बात यह है कि जो व्यक्ति निजी मेहनतसे जमीन जोतता है, अुसका अुस जमीन पर जोतते रहनेका अधिकार होना चाहिये और अिस प्रकार की गअी काश्तकी पैदावारमें से हिस्सा बांटनेका हक किसी दूसरे व्यक्तिको नहीं होना चाहिये। अिसके अलावा अेक ओर भूदान-आन्दोलनके जरिये भूमिहीनोंको जमीन देनेका देशव्यापी प्रयत्न चल रहा है, तब दूसरी तरफ अब तक काश्त करते रहे लोगोंका अिस प्रकार बेदखलीके द्वारा भूमिहीन बना दिया जाना जमानेकी अपेक्षाके विपरीत है।

जब तक देशकी भूमि-व्यवस्थामें आमूल परिवर्तन नहीं होता, तब तक जमीन-मालिक अलग और काश्त करनेवाले बटाअीदार अलग, यह स्थिति किसी न किसी रूपमें बनी रहेगी। कअी राज्य-सरकारोंने बटाअीदारोंके संरक्षणके लिअे विशेष कानून बनानेकी आवश्यकता भी महसूस की है और वैसे कदम अुठाये हैं। अैसी दशामें अेक ओर तो जमीन-मालिक भय और मोहके कारण बटाअीदारोंको बेदखल करनेकी कोशिश करते हैं और दूसरी तरफ बटाअीदार स्वाभाविकतया जमीन पर कायम रहना चाहते हैं। अिस प्रकारके संघर्षकी स्थितिका हल सिर्फ कानूनसे नहीं हो सकेगा। कानूनी स्थिति जो कुछ भी हो, सामाजिक न्याय यह कहता है कि जिस तरह बच्चोंका अपनी माता पर समान रूपसे अधिकार होता है, अुस तरह भूमाता पर भी अुसकी सभी संतानोंका समान अधिकार है।

अतः प्रादेशिक भूदान-समितियोंको चाहिये कि वे अिस मौलिक सिद्धान्तके आधार पर राजनतिक पक्षों और संबंधित वर्गोंके सहयोगसे अिस बातका प्रयत्न करें कि जमीन-मालिकों और बटाअीदारोंके पारस्परिक संबंध सद्भावनापूर्ण और विश्वासमय बनें। बिहार प्रादेशिक भूदान-समितिने वहांकी परिस्थितिके अनुसार अिस ओर कदम भी अुठाया है। सर्व-सेवा-संघ आशा करता है कि भूमिवान लोग बटाअीदारोंके अूपर बतलाये हुअे मौलिक अधिकारका सम्मान करेंगे और अैसा न हो तो बटाअीदार अपने अूपर आनेवाली तमाम मुसीबतोंको सहकर भी अपने अुस अधिकार पर कायम रहेंगे।

ठक्करबापा

[जीवन-चरित्र]

लेखक : कान्तिलाल शाह

अनु० रामनारायण चौधरी

अिस पुस्तकमें दीन-दुखियोंके बेली श्री ठक्करबापाका प्रामाणिक जीवन-चरित्र दिया गया है। श्री ठक्करबापाका जीवन हमारे लिअे अेक आदर्श अुपस्थित करता है। भारतवर्षमें जहां कहीं अकाल, बाढ़ या भूकम्पके कारण लोग संकटग्रस्त होते, वहीं ठक्करबापा अपने अनुयायियोंके साथ अुन्हें सहायता देने पहुंच जाते। सार्वजनिक सेवाक्षेत्रमें प्रवेश करनेके बाद अंतिम दिन तक अुनके जीवनका अेक-अेक क्षण गरीबों, पीड़ितों और हर तरहसे पिछड़े हुअे लोगोंकी सेवामें ही बीता। अैसे पवित्र और अुदात्त जीवनका आदर्श अुन सबको अपने सामने रखना चाहिये, जो देश अथवा जनताकी सेवाको अपना लक्ष्य बनाना चाहते हैं।

कीमत ५-०-० डाकखर्च १-२-०

प्राप्तिस्थान : नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद-१४

सस्ता साहित्य मंडल, नअी दिल्ली

हरिजनसेवक

३० अप्रैल १९५५

लोकशाही और पक्षपद्धति

यह बात स्पष्ट है कि धारासभा और राजनीति अब हमारे समाज-जीवनका अेक अनिवार्य अंग बन गयी हैं। हम स्वराज्य चाहते थे, अुसका अर्थ ही यह था। अब प्रश्न यह पैदा होता है कि राजकारोबार चलानेमें लोकशाहीकी पद्धति तो स्वीकार है, लेकिन क्या अुसके लिअे लोकशाहीकी पक्षपद्धति भी अनिवार्य है? यह प्रश्न श्री विनोबाने अुठाया है।

प्रश्न अुठनेका कारण स्पष्ट है। शुद्ध सेवा करनेमें शायद ही कभी पक्षों या दलबंदीका झगड़ा हो सकता है। परंतु सार्वजनिक कार्योंमें सत्ता और सेवा साथ-साथ चलती हैं। अैसा लगता है कि सेवा करनेके लिअे भी सत्ता या पदकी जरूरत है। संक्षेपमें, सेवा और सत्ता परस्पर गुंथी हुअी रहती हैं।

फिर पक्षपद्धति आये तो अुसके साथ पक्षकी चाबुक — व्हिप — भी आयेगी ही। लेकिन क्या अुससे व्यक्ति स्वातंत्र्यका हनन नहीं होगा — अैसा भी पूछा जाता है। अिसलिअे कुछ लोग मानते हैं कि पक्षातीत रहना ही अच्छा है।

केवल सेवा करनेकी अिच्छा रखनेवाले भी चाहते हैं कि धारासभा वगैरा राज्यके स्थानोंमें जानेवाले सत्ताधारी राष्ट्र-सेवा-संघ जैसी किसी संस्थाके सर्वोपरि आदेशके अधीन रहकर काम करें। जैसा श्री विनोबाने पुरी सम्मेलनमें कहा:

> "समाजमें सेवाकी जरूरत है।... अहिंसक समाजमें सबसे बड़ी संस्था सेवामय होगी। लोक-सेवक-संघमें यह था कि कुछ क्षेत्रोंमें शासन रखकर सारा समाज दण्ड-निरपेक्ष हो जाता। सेवा सार्वभौम होती, और सत्ता सेविका होती। सत्ताका नियंत्रण करनेका अधिकार अुस सेवा-संस्थाको होता; अुसका आशीर्वाद लेकर ही चुनाव होता।"
>
> (हरिजनसेवक, १६–४–'५५; पृ० ४९)

अिसलिअे समाजका लोक-सेवक-संघ भी अेक सत्ता तो बनेगा ही! मतलब यह कि सेवाके साथ सत्ता और अमुक नीति या कार्यके संबंधमें मतभेद और पक्ष — ये चीजें विद्याके साथ अविद्याकी तरह अथवा शब्दके साथ अर्थकी तरह परस्पर जुड़ी हुअी हैं; सामूहिक जीवन-विचारमें प्रश्नके रूपमें आये बिना वे रही नहीं सकतीं।

अिसलिअे यह मानकर चलना चाहिये कि प्रत्येक प्रजाको यह प्रश्न हल करना है। भले अुसे तानाशाहीसे हल किया जाय, जिसे मैं संतशाही या ऋषिशाही कहता हूं, अुस नैतिक तानाशाहीसे हल किया जाय, राजशाहीसे हल किया जाय या लोकशाहीकी स्वतंत्र धारासभा-पद्धतिसे हल किया जाय। गीताकारके कथनानुसार अग्निके साथ धुअेंकी तरह अिनमें से हर पद्धति सदोष तो है ही। फिर भी जिसमें मानव-स्वातंत्र्य और मानव-विकासकी सबसे ज्यादा रक्षा हो, वही मार्ग मुक्तिका है। और वह लोकशाहीका मार्ग है, अैसा हमारे देशने तय किया है। अिसलिअे हमारे राष्ट्रको अब अिस ढंगकी तालीम दी जानी चाहिये।

अिस मामलेमें अिंग्लैण्डकी प्रजाने पिछली पांच-सात सदियोंमें अच्छा विकास किया है। बालिग मताधिकार और पक्षपद्धतिके आधार पर चुनाव करके अिंग्लैण्डकी प्रजा अपनी राज्य-संस्थाकी रचना कर लेती है। अिस काममें अुसने अितनी योग्यता सिद्ध कर ली है कि अगले चुनावोंमें हम देखेंगे कि वह कुछ ही दिनोंमें यह काम आसानीसे पूरा कर लेगी; चुनावोंके जरिये अपने राष्ट्रजीवनसे संबंध रखनेवाले अेक तात्कालिक बड़े प्रश्नके विषयमें प्रजामत निश्चित करके वह अपनी सरकार बना लेगी।

हमारे देशमें सरकार-रचनाके संबंधमें अेक बात जितनी चाहिये अुतनी स्पष्ट नहीं हो पाअी है। रचनात्मक कार्यकर्ताओंको अुस पर विशेष ध्यान देना चाहिये। वह यह है कि अधिकसे अधिक योग्यताके साथ देशकी सारी सरकारोंकी रचना करना और अुन्हें अच्छी तरह चलाना भी देशके विविध रचनात्मक कार्योंमें स्व-राज्यका अेक आवश्यक रचनात्मक कार्य है। अिसी अर्थमें गांधीजीने कहा था कि पार्लियामेन्टरी कार्यक्रम अब देशमें घर कर रहा है और राष्ट्रको अपने सेवकोंमें से आवश्यक सेवक अिसके लिअे भी निकालने चाहिये।

यदि सेवा और सत्ता तथा स्वार्थ और देशप्रेम वगैराकी भावनाओंका हमने अुनकी योग्यताके अनुसार अुचित विकास किया होता और अुन पर ठीक नियंत्रण रखा होता, तो गांधीजीकी अिस सूचना पर हम आसानीसे अमल करके दिखा सकते थे। परंतु अैसी स्वस्थता हम काफी मात्रामें बता नहीं सके। फिर भी अिसका यह अर्थ नहीं कि सरकार-रचनाके कार्यसे हमें दूर रहना चाहिये या हम दूर रह सकते हैं। संभव है कुछ लोग अपने स्वभाव और स्वधर्मको सोच-समझकर अिस कार्यमें शरीक न हों — अुसी तरह जैसे सभी लोग सेना या शिक्षण-कार्यमें नहीं जाते। लेकिन अेक राष्ट्रके नाते हम अैसा नहीं कर सकते। तब फिर अितना ही बाकी रहता है कि लोकतांत्रिक आचरणकी आदतें हम अपनेमें ज्ञानपूर्वक पैदा करें और अुन्हें बढ़ायें।

कांग्रेसको अिसे अपनी जिम्मेदारी समझना चाहिये। अुसके तंत्रमें आरंभसे ही लोकशाहीकी कद्र की गअी है; लोकशाहीकी पद्धतिसे काम करते-करते ही अुसमें अंग्रेजोंसे देशका कारोबार अपने हाथमें लेकर अुसे चलानेकी शक्ति आअी है। अिसीलिअे हम अपने देशका संविधान आसानीसे बना सके; मुस्लिम लीग पाकिस्तानमें अैसा नहीं कर सकी, क्योंकि अुस संस्थाकी रचना और काम करनेका ढंग दूसरी तरहका था। फिर भी हम लोकशाहीकी संपूर्ण प्रणाली तो नहीं सीख पाये हैं। अुसके सच्चे सबक सीखनेके मौके अिस समय ही हमें मिल रहे हैं। अिसमें गलतियां भी होती हैं, लेकिन अुनसे घबरा जायं तो काम नहीं चलेगा।

अन्तमें, चुनाव और पक्षपद्धतिके बारेमें हालमें ही अेक सुन्दर घटना अिंग्लैण्डमें घटी है, जो ध्यान देने जैसी है। वह 'अे० आअी० सी० सी० अिकोनॉमिक रिव्यू' (१५ अप्रैल) में दी गअी है। मजदूर पक्षके सदस्य श्री बेवनने कुछ समय पूर्व अपने पक्षके नेता पर अणुबमकी नीति-संबंधी चर्चामें आक्षेप किया था। अुस परसे अुनके खिलाफ अनुशासनकी कार्रवाअी की गअी थी। श्री बेवनने अिस बारेमें स्पष्टीकरण करते हुअे कहा:

> "हमारे पक्ष जैसे महान् पक्षमें किसी विशेष परिस्थितिमें समाजवादके सिद्धान्तोंका अमल कैसे किया जाय, अिसकी चर्चाकी संभावना तो हमेशा ही रहेगी। कोअी राजनीतिक पक्ष अगर लोकशाही पद्धतिसे काम करता हो, तो अुसमें अैसी चर्चा चलनी चाहिये और अुसके साथ पक्षकी कार्यसाधकताकी भी रक्षा होनी चाहिये। अैसा करना हमेशा आसान नहीं होता, लेकिन अिसके लिअे हमें प्रयत्न तो करना ही होगा।"

अिससे अधिक अर्थगंभीर अुद्गार अनुदार-पक्षके नेता सर विंस्टन चर्चिलने प्रकट किये। बेवन-प्रकरणकी चर्चा करते हुअे अिस महान् अंग्रेज राजनीतिज्ञने २६ मार्चको कहा:

"पार्लियामेन्टके सदस्यका पहला कर्तव्य यह है कि प्रामाणिकता तथा निःस्वार्थ भावसे अुसे अपने प्रिय देशके स्वाभिमान और सलामतीके लिअे जो कुछ सत्य और आवश्यक मालूम हो वही करे;

"अुसका दूसरा कर्तव्य अपने मतदाताओंके प्रति है, जिनका वह प्रतिनिधि है; परंतु वह अुन्हींकी हांमें हां मिलानेके लिअे बंधा हुआ कोअी मुखतार या 'डेलिगेट' नहीं है;

"अिसके बाद तीसरा स्थान अपने पक्षके तंत्र या कार्यक्रमके प्रति रहे कर्तव्यका आता है।

"अिन तीनों प्रकारकी वफादारीका पालन करना चाहिये। परंतु सही ढंगसे काम करनेवाली किसी भी लोकशाहीमें ये वफादारियां अूपरके क्रमसे ही आती हैं, अिसमें जरा भी शक नहीं है।"

चर्चिल जैसे अनुभवी राजपुरुषके ये अुद्गार अेक महान् नीति-वाक्य ही माने जायंगे। कोअी व्यक्ति किसी पक्षको पसन्द करता है, अिसका यह मतलब नहीं कि वह अपने देशप्रेमको, अुसके कल्याण-संबंधी अपनी दृष्टि और विचारोंको अथवा अपने स्वाभिमान और विचार-स्वातंत्र्यको छोड़ देता है। जिस पक्षमें अिन सबके लिअे अवकाश होगा, अुसीको वह आम तौर पर पसन्द करेगा। और प्रत्येक पक्षके लोग अगर अिस तरह व्यवहार करें, तो अुससे निष्पक्षताके रहस्यकी भी अपने-आप रक्षा होगी। अिस तरह व्यवहार करनेमें व्यक्ति अपने-अपने पक्षकी सुनीति और सन्निष्ठाकी ही रक्षा नहीं करेंगे, बल्कि अुससे पक्षोंके भेदोंको निर्दोष मतभेद या दृष्टिकोणका रूप प्राप्त होगा और वे प्रगतिके पोषक बनेंगे। भारतमें हमारी लोकशाहीको अिस अूंचे दर्जे पर पहुंचाना हमारे लोकशिक्षणका अेक महान् रचनात्मक कार्य है, जिसमें सब नागरिक भाग ले सकते हैं।

२२–४–'५५ मगनभाई देसाई
(गुजरातीसे)

पुरी सर्वोदय सम्मेलन

सर्वोदय समाजका सातवां वार्षिक सम्मेलन २५,२६, २७ मार्च, १९५५ को पुरी (अुड़ीसा) में हुआ। सम्मेलनके अध्यक्ष थे अेक सीधे-सच्चे और सरल स्वभावके व्यक्ति श्री रविशंकर व्यास, जो गुजरातमें 'महाराज' के नामसे प्रसिद्ध हैं। सम्मेलनकी कार्रवाअी सबेरे ९ बजे आधे घंटेके कताअी-यज्ञके साथ आरंभ हुअी। अुसके बाद सब धर्मोंकी प्रार्थना हुअी। अिसके पश्चात् सर्वोदय समाजके मंत्री श्री शंकरराव देवने प्रतिनिधियोंका स्वागत करते हुअे सम्मेलनकी तुलना सत्संगसे की और कहा कि भूदान-यज्ञ आन्दोलनने हमारे लोगोंके जीवनमें और हमारे देशके अितिहासमें, जिसमें हम सब निमित्तमात्र हैं, अेक नया अध्याय आरंभ किया है; अिसलिअे अैसे सत्संगोंकी अधिक आवश्यकता और अधिक महत्त्व है। बादमें अुन्होंने श्री रविशंकर महाराजसे सम्मेलनका अध्यक्षपद ग्रहण करनेकी प्रार्थना की।

आचार्य हरिहरदासके छोटेसे स्वागत-भाषणके बाद विनोबाने सम्मेलनका अुद्घाटन किया*। अपने ७५ मिनटके भाषणमें अुन्होंने आजकी गंभीर और विवादास्पद समस्याओं पर कुछ प्रकट चिन्तन और विचार किया। आरंभमें ही अुन्होंने कहा कि मैं जो कुछ कहने जा रहा हूं अुसमें मेरी पूर्ण श्रद्धा है, लेकिन मेरा यह आग्रह नहीं है कि सब लोग अुसे स्वीकार करें ही। मेरा अेकमात्र अुद्देश्य अपने विचार बिना किसी दुराव-छिपावके आपके सामने रखना है, ताकि आप अुन पर विचार कर सकें।

* अुद्घाटन भाषणका सार ता० १६–४–'५५ के अंकमें दिया जा चुका है।

दोपहरका अधिवेशन श्री जयप्रकाशनारायणके भाषणके साथ आरंभ हुआ। अुन्होंने नीचेके शब्दोंमें आजका मूल प्रश्न सभाके सामने रखा:

"अगर हमें लगता है कि कानून या शासनिक कार्रवाअी सर्वोदय समाजकी स्थापना नहीं कर सकती — वह साम्यवादी या समाजवादी व्यवस्था ही कायम कर सकती है —तो हमें अिस प्रश्नका अुत्तर देना होगा: सर्वोदय समाजकी स्थापना कैसे की जाय? हम शस्त्र-शक्तिका सहारा लेंगे, कानूनकी शक्तिका सहारा लेंगे या जनशक्तिका सहारा लेंगे? कौनसी शक्ति हमें सर्वोदय समाजकी स्थापनाकी दिशामें ले जायगी? हम कौनसा मार्ग लेंगे?"

विभिन्न मार्गोंके पक्ष-विपक्षकी चर्चा करनेके बाद अुन्होंने कहा, "भगवान्ने विनोबाको अपना साधन चुना है। लेकिन हम अुन्हें भूल जायं और सर्वोदयकी स्थापना तथा नये समाजकी बुनियाद डालनेके क्रान्तिकारी कार्यमें लग जायं। यह अुद्देश्य भूदान-आन्दोलनकी प्रक्रियासे सिद्ध किया जा रहा है। अिसलिअे मैं अुन सब लोगोंसे, जो सर्वोदयकी विचारधाराको मानते हैं लेकिन आज सरकारोंमें, राजनीतिक पार्टियोंमें या रचनात्मक क्षेत्रोंमें काम कर रहे हैं, अपील करता हूं कि वे अिस मुद्दे पर गंभीरतासे विचार करें और अुस पर अमल करें। अगर आपको अपना पुराना प्रिय कार्यक्रम छोड़ना पड़े या बिलकुल बन्द कर देना पड़े तो भी कोअी चिन्ता न करें। आप मेहरबानीसे अुन सबको छोड़ दें और अिसी काममें अेकाग्र मनसे लग जायं।"

अिसके बाद दूसरे लोगोंके भाषण हुअे। कांग्रेस अध्यक्ष श्री ढेबरभाअीने कहा, "मैं विनोबाजीके हृदयमें जल रही आगको जानता हूं। वे कांग्रेससे अनेक बातोंकी आशा रखते हैं और अुन्हें रखना भी चाहिये। अुन्हें कांग्रेससे सेवायें लेनेका अधिकार है।" भूदान-आन्दोलनके लिअे अधिक बड़ी सफलताकी प्रार्थना करते हुअे अुन्होंने अन्तमें कहा, "भूदान-कार्य केवल विनोबाजीकी या सर्व-सेवा-संघकी ही जिम्मेदारी नहीं है। वह कांग्रेस या प्रजा-समाजवादी पार्टीकी भी अुतनी ही जिम्मेदारी है। अिस महान् प्रयत्नमें मैं अपने हार्दिक सहयोगका वचन देता हूं।"

डॉ० राजेन्द्रप्रसादने बताया कि सर्वोदयी और अन्य विचारधाराओंमें बुनियादी भेद यह है कि पहली विचारधारा अपरिग्रह पर जोर देती है, जब कि दूसरी विचारधारायें अधिकाधिक संग्रह पर जोर देती हैं। भूदान-आन्दोलन सर्वोदयी विचारधाराका प्रतीक है, जैसे चरखा गांधीजीके आन्दोलनका प्रतीक था। वह हमें कहना चाहता है कि निवृत्तिमें कैसे संतोष माना जाय, दूसरेके सुखमें कैसे सुख अनुभव किया जाय और हमारे पासकी चीज दूसरोंको देनेमें कैसे आनन्द माना जाय। श्री राजेन्द्रबाबूने स्वीकार किया कि भारत यह दावा नहीं कर सकता कि अुसने सेना छोड़ दी है। सच पूछा जाय तो ब्रिटिश हुकूमतसे आज वह सेना पर कहीं ज्यादा बड़ी रकम खर्च कर रहा है। परंतु आज भारतकी कही हुअी बातोंका बाहरी दुनिया पर जो थोड़ा-बहुत प्रभाव है, अुसका कारण अुसकी सैनिक शक्ति नहीं बल्कि नैतिक शक्ति है। अुन्होंने पूछा, "हम अिस दुविधाकी स्थितिमें कब तक रहेंगे? हमारा हृदय और भावनायें हमें अेक मार्गकी ओर ले जाती हैं, जब कि देशकी और विदेशोंकी परिस्थिति हमें दूसरी दिशामें ले जाती हैं। सरकारमें और अुसके बाहर रहकर काम करनेवालोंको अिस प्रश्न पर विचार करना है। मैं जानता हूं कि यह समस्या आजके सत्ताधारियोंमें से हरअेकको परेशान नहीं करती। अुनमें कुछ तो अिस विषयकी चर्चाको ही अप्रासंगिक मानते हैं। लेकिन दूसरे अिस रायके नहीं हैं और वे गांधीजीकी विचारधाराकी तरफ झुकते

हैं। अब यह सर्वोदय समाजका काम है कि वह अैसे रास्ते और साधन निकाले, जिससे वे सब पूरी तरह अुसकी तरफ खिंच आयें। जैसा कि विनोबा कहते हैं, अिसका रास्ता है अधिकाधिक जनशक्ति पैदा करना।" अन्तमें श्री राजेन्द्रबाबूने कहा कि हमें अैसे सारे रास्ते आजमाने चाहिये, जो लोगोंको सरकारसे स्वतंत्र रहनेकी शक्ति दे सकें। अिसलिअे नहीं कि दोनोंके बीच कोअी विरोध है, बल्कि अिसलिअे कि स्वावलंबी और आत्मनिर्भर लोग राष्ट्रकी महान् शक्ति हैं। अुन्होंने सर्वोदयी विचारधारामें श्रद्धा रखनेवालोंसे अुसी तरह अपने पांवों पर खड़े रहनेकी अपील की, जिस तरह अनेक विचारवान् माता-पिता अपने बच्चोंकी मदद और सहारा नहीं चाहते।

शामके प्रार्थना-प्रवचनमें विनोबाने सर्वोदय कार्यकर्ताओंके सामने खड़ी भारी जिम्मेदारी पर जोर दिया, जिसे वे तभी पूरी कर सकते हैं, जब वे अपने-आपको शून्यवत् बनानेका सतत प्रयत्न करें। अुन्होंने कहा, हमें अिसके लिअे निरंतर जाग्रत रहना होगा और सदा याद रखना होगा कि हम केवल अपने स्वामी, भारतकी जनता, की सेवा करनेवाले सेवक हैं। अिसके अलावा, हमें यह भी समझना चाहिये कि जो कार्य हमें करना है, अुसकी प्रेरणा हमें सर्व-शक्तिमान् परमेश्वरसे मिली है, जिसके हाथमें हम सब केवल हथियार हैं।

२६ मार्चको सुबह प्रतिनिधि लोग नीचेके प्रश्नों पर विस्तृत चर्चा करनेके लिअे पांच भागोंमें बंट गये: (१) जमीन अिकट्ठी करना, (२) जमीन बांटना, (३) रचनात्मक कार्य और नयी तालीम, (४) संपत्तिदान यज्ञ, और (५) सूतांजलि।

दोपहरकी सभा सन्त तुकड़ोजीके प्रभावशाली भाषणसे शुरू हुअी। सन्त तुकड़ोजीके लोकप्रिय तथा भक्ति-भावपूर्ण भजनों और लोकगीतोंने बरार और महाराष्ट्रके लोगोंके हृदयोंमें अमर स्थान बना लिया है। अुन्होंने समझाया कि अगर दो साल तक कड़ी मेहनतसे बुद्धिपूर्वक काम किया गया, तो अुससे नये भारतकी अैसी मजबूत नींव पड़ेगी कि वह आनेवाले पांच हजार वर्षों तक सारे चढ़ाव-अुतारोंका सामना करके जिन्दा रह सकेगा। अुन्होंने कार्यकर्ताओंसे अपने काम पर अटल रहनेकी अपील की।

अिसके बाद विभिन्न कार्यकर्ताओंके ११ भाषण हुअे (हरअेक ३ मिनटका), जिनमें अुन्होंने भूदान या अुससे जुड़े हुअे कामके महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर जोर दिया।

अिसके बाद हमें गांधीवादी अर्थशास्त्रके अनुभवी आचार्य डॉ० जे० सी० कुमारप्पाका अुस दिनका सबसे महत्त्वपूर्ण भाषण सुननेको मिला, जो सम्मेलनकी प्रमुख घटना कही जायगी। अपने ५० मिनटके भाषणमें अुन्होंने अपनी अिस श्रद्धाको दोहराया कि गांधीजीने हमें सर्वोदयका जो मंत्र दिया है, अुससे हम हाअिड्रोजन बमका नाश कर सकते हैं और आजके दुनिया पर मंडरानेवाले युद्धके बादलोंको हटा सकते हैं। लेकिन अुन्होंने अिस बात पर दुःख प्रगट किया कि सर्वोदय आन्दोलनके कार्यकर्ताओंने अहिंसक अर्थ-व्यवस्थाके गूढ़ अर्थोंको पूरी तरह समझा नहीं है। हाअिड्रोजन बमकी जड़ें पश्चिमकी अर्थ-व्यवस्थामें हैं, जिससे हमें छुटकारा पाना है और गांधीजीकी शिक्षाके आधार पर हमारे जीवनका पुनर्निर्माण करना है।

'अन्टु दिस लास्ट' की कहानीका अुल्लेख करते हुअे, जिसने गांधीजीको 'सर्वोदय' शब्द दिया, डॉ० कुमारप्पाने हमें पैसेके तंत्रसे सावधान रहनेको कहा और स्वावलंबनके महत्त्वकी चर्चा की, जिसका अहिंसासे निश्चित संबंध है। अुन्होंने आगे कहा कि राअिफल क्लब जैसी चीजें अुतनी ही बुरी हैं, जितना कि हाअिड्रोजन बम। अुन्होंने सबसे अपील की कि पहले हम अपने ही घरकी जांच करें और अुसे सुधारें।

अपने प्रार्थना-प्रवचनमें विनोबाने कहा कि सर्वोदयका कार्यकर्ता साधक जैसा है, जिसे दूसरे पक्षोंके लोगोंसे डरनेकी कोअी जरूरत नहीं होती, बल्कि अपने ही पक्षके लोगोंसे, नहीं स्वयं अपनेसे ही डरना होता है। साधकमें केवल अच्छे-बुरेके भेदकी विवेकबुद्धि ही नहीं होनी चाहिये, बल्कि अुसे अिसका विवेक भी होना चाहिये कि कौनसा काम वह करे और कौनसा न करे। हमारा ध्येय जनशक्ति पैदा करना है, जिसके लिअे हमें, गीताकी शिक्षाके अनुसार, अपने भीतर व्यवसायात्मिका बुद्धिका विकास करना चाहिये। अिसलिअे हमें अेक या दूसरे मानवदयाके काममें नहीं लगना है, बल्कि केवल अैसे काममें लगना है जो हमें आजके युगकी चुनौतीका सामना करने लायक बना सके। हमें अपनी बुद्धिसे मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिये और अगर हममें आवश्यक बुद्धि न हो तो अुन लोगोंके पास जाना चाहिये जिनमें वह बुद्धि हो। अगर हम अैसे लोगोंको न पहचान सकें तो हमें भगवान्की शरण लेना चाहिये। लेकिन यह आसान नहीं है, क्योंकि भगवान् प्रत्यक्ष दिखाअी नहीं देता। "आगामी दो वर्षोंमें", विनोबाने बताया, "हमारी कसौटी होनेवाली है। किसी अेक या दूसरे अच्छे काममें लगनेसे कोअी लाभ नहीं होगा। हमें किसी निश्चित कार्य और मिशनके लिअे अपने-आपको समर्पण करना चाहिये।"

तीसरे और अंतिम दिन सबेरे विभागीय रिपोर्टें पढ़ी गअीं और बादमें कुछ कार्यकर्ताओंने अुन पर अपना मत प्रकट किया।

अिसके बाद सर्व-सेवा-संघने सम्मेलनके लिअे जो प्रस्ताव तैयार किया था अुसे श्री शंकररावजी देवने सम्मेलनके सामने रखा।

तब कहीं सम्मेलनके अध्यक्ष श्री रविशंकर महाराजने थोड़ेसे शब्द कहे। अपनी मीठी बोलीमें महाराजने अन्तःकरणकी शुद्धिका अनुरोध किया, जिसके बिना कोअी महत्त्वपूर्ण कार्य किया ही नहीं जा सकता। अुन्होंने कहा कि हमारे देशमें बुद्धिकी कमी नहीं है, कमी है त्यागकी। और अुसका कारण यह है कि अुत्पादक शारीरिक श्रमके प्रति हमारी विरक्ति दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती है। हमारा अेक अजीब विश्वास हो गया है कि जो लोग हाथ-मेहनत करते हैं अुन्हें मेहनत न करनेवालोंकी अपेक्षा कम मिलना चाहिये। यह मनोवृत्ति छोड़ना चाहिये और हमें अुद्यमी बनना चाहिये। अन्तमें अुन्होंने अपने देशवासियोंको श्री शंकररावजी द्वारा रखे गये प्रस्तावकी पुकारका सम्मान करनें और अुसके अनुसार चलनेका अनुरोध किया।

अिस लंबी बैठकके बाद ५-५५ से ६-२० तक सायंकालीन प्रार्थना हुअी। अुसके बाद अेक बुजुर्ग जापानी भिक्षुने अपनी मीठी जापानीमें (जिसका अुनके अेक जापानी शिष्यने हिन्दीमें अनुवाद किया) भूदान-आन्दोलनको — जो कि भगवान् बुद्ध और महात्मा गांधीजीके पद-चिन्होंका अनुगामी आन्दोलन है — अपना आशीर्वाद दिया। अुन्होंने यह आशा प्रगट की कि यह कार्य निश्चय ही अहिंसा और विज्ञानके विकासका मार्ग तैयार करनेवाला सिद्ध होगा।

अिसके बाद विनोबाजीका अन्तिम बिदाअीका भाषण हुआ, जो अुनके महान् प्रवचनोंमें अेक माना जायगा। आकाशमें आणविक शस्त्रास्त्रोंके घिर रहे बादलोंसे रंचमात्र विचलित हुअे बिना अुन्होंने अपनी गंभीर वाणीमें घोषित किया, "यदि साधारण भौतिक परमाणुओंमें अितनी शक्ति होती है तो हमें समझना चाहिये कि चेतन परमाणुओंमें — मनुष्यमें — कितनी शक्ति होगी।"

विनोबाजीने समझाया कि व्यवस्थित और सीमित हिंसा आज बढ़ते बढ़ते अतिहिंसाकी अवस्थामें आ पहुंची है। और कुछ लोग महसूस कर रहे हैं कि अुसे रोकना चाहिये, नियंत्रणमें रखना चाहिये। लेकिन प्रगतिका चक्र कभी पीछेकी ओर नहीं लौटता। वह सीधा आगे ही जाता है। तो अिस अतिहिंसाको या तो अहिंसामें

अपना रूपान्तर करना होगा या अुससे भी अधिक विकराल रूप धारण करके मनुष्य-समाजको समाप्त कर डालना होगा। लोगोंसे साहस और वीरता अपनानेका अनुरोध करते हुअे अुन्होंने कहा, हमें अतिहिंसाका विसर्जन करके परिपूर्ण अहिंसाके लिअे तैयार हो जाना चाहिये। या दूसरे शब्दोंमें हमें दण्ड-मुक्त और शासन-मुक्त समाजकी स्थापनाके लिअे कमर कस लेना चाहिये।

अनन्य विश्वासके साथ अुन्होंने कहा:

"मुझे लगता है कि यह दण्ड-मुक्त और शासन-मुक्त समाज अब जल्दी लाया जा सकेगा — दो वर्षमें लाया जा सकेगा। हमें शस्त्रास्त्रोंके निकम्मेपनको समझ लेना चाहिये और साहस तथा श्रद्धाके साथ अिस तरह काममें लग जाना चाहिये कि हम यह नया समाज सारी दुनियामें स्थापित कर दें।"

और:

"मुझे महसूस होता है कि अेक अीश्वरीय प्रेरणा काम कर रही है और वह नये समाजकी रचनाका सारा काम हमारे हाथोंमें सौंप रही है। मुझे तो लगता है कि १९५७ तक सारी दुनियामें शासन-मुक्त समाजकी स्थापना हो जायगी।"

सत्याग्रहका शास्त्र समझाते हुअे विनोबाने कहा:

"जो लोग सत्याग्रहके बारेमें सोचते हैं, वे अैसा मानते हैं कि जिस तरह मनुष्यने छोटी हिंसासे बड़ी हिंसामें और बड़ी हिंसासे अतिहिंसामें कदम रखा है, अुसी तरह सत्याग्रहका रूप भी तीव्रसे तीव्रतर होता जायगा। आज हमारी जो पदयात्रा चल रही है, वह भी अेक सत्याग्रह है, अैसा हम कहते हैं। लोग कहते हैं कि यह अेक सौम्य सत्याग्रह है, लेकिन फिर पूछते हैं कि अगर अिससे काम नहीं बना तो मैं कोअी तीव्र प्रकारका सत्याग्रह करूंगा या नहीं। तो अिस तरह अुसकी तीव्रता बढ़ानेकी बात सोचते हैं। किन्तु यथार्थमें हमारा चिन्तन अिससे बिलकुल अुलटा होना चाहिये। हमने जो सौम्य सत्याग्रह शुरू किया है अगर अुससे काम बनता नहीं दिखेगा, तो मैं अुससे भी कोअी सौम्यतर सत्याग्रह ढूंढूंगा, ताकि अुसकी ताकत बढ़े। और अगर अुससे भी काम नहीं बना, तो सौम्यतम सत्याग्रह निकालूंगा जिससे अुसकी ताकत और बढ़े।

"हिंसामें सोचा जाता है कि सौम्य शस्त्रसे काम नहीं चला तो अुससे तीव्र शस्त्र लेनेसे ताकत बढ़ेगी। लेकिन अहिंसाकी प्रक्रिया अिससे बिलकुल अुलटी होनी चाहिये। अगर सौम्य सत्याग्रहसे हमें कामयाबी नहीं मिलती तो मानना चाहिये कि हमारी सौम्यतामें कुछ न्यूनता है और अिसलिअे हमको अपनी सौम्यता बढ़ानी चाहिये। यही सत्याग्रहका स्वरूप है।"

विनोबाजीने बताया कि ब्रिटिश शासन-कालमें आजादीके लिअे जो सत्याग्रह हुआ, वह अेक निषेधक कार्य था। वह अेक विशिष्ट परिस्थितिमें, अुपाधिसे युक्त परिस्थितिमें अहिंसाका प्राथमिक प्रयोग था। अिसलिअे अुन दिनों सत्याग्रहकी जो प्रक्रिया हुअी, वह परिपूर्ण हुअी, अैसा नहीं मानना चाहिये। अुन्होंने आगे कहा:

"अिस बातको ध्यानमें रखकर हमें स्वराज्य-प्राप्तिके बाद आज अपने देशमें चल रही डेमोक्रसीकी हालतका और दुनियामें जो शक्तियां काम कर रही हैं, अुनका खयाल करना चाहिये और समझना चाहिये कि हमें सत्याग्रहकी मात्रा अुत्तरोत्तर सौम्य करना होगी। सौम्य, सौम्यतर, सौम्यतम; अिस तरहसे अगर सत्याग्रह बढ़ता गया, तो वह अधिक कारगर और शक्तिशाली साबित होगा।"

फिर सर्व-सेवा-संघके प्रस्तावकी चर्चा करते हुअे अुन्होंने कहा कि यह प्रस्ताव आदेश नहीं है:

"अिस प्रस्तावमें सारी दुनियासे प्रार्थना की गयी है कि दो साल जोर लगाओ और अिस अरसेमें अपना समाज शासन-मुक्त करनेकी कोशिश करो। जब हम समाजको शासन-मुक्त करेंगे, तभी अहिंसामें प्रवेश होगा। आपके सामने जो प्रस्ताव रखा गया है, वह सारी दुनियाके कल्याणके लिअे है, सारी भूत-सृष्टिके लाभके लिअे है। 'सर्वभूतहिते रताः' यही सर्वोदयके कार्यकर्ताओंका आदर्श है। यह केवल भूमि-समस्या हल करनेकी बात नहीं है। हमें दुनियाकी कुल शासन-संस्थायें मिटानी हैं, क्योंकि वे हिंसाको सीमित करनेमें कारगर नहीं हो सकतीं। हमें अहिंसाकी प्रतिष्ठापना करना है। हम विश्व-शांतिके लिअे आपसे भूदान मांग रहे हैं।"

आगे चलकर अुन्होंने कहा:

"आप जहां कहीं भूमि मांगनेके लिअे जायं वहां लोगोंको यह समझायें कि भाअी, आप जो दान-पत्र देंगे वह विश्व-शांतिके लिअे है। क्या आप विश्व-शांति नहीं चाहते? यदि चाहते हैं तो यहांकी भूमि-समस्या हल करनेके लिअे भूमिदान और संपत्तिदानकी जो योजना है अुसमें अपना हिस्सा दीजिये। आपका यह छठा हिस्सा विश्व-शांतिके लिअे आपका वोट होगा।"

और फिर अुन्होंने कहा,

"सब लोग दो साल तक अिस काममें अपना सारा जोर लगायें। हमारा यह आवाहन केवल भारतके लोगोंके लिअे या सिर्फ सर्वोदय-प्रेमियोंके ही लिअे नहीं, सब लोगोंके लिअे है। हमारा यह आवाहन सारी दुनियाको है कि दो साल जोर लगाअिये और १९५७ तक दण्ड-मुक्त समाजकी स्थापना करिये।"

१२-४-'५५ सुरेश रामभाअी

(अंग्रेजीसे)

क्या हम आजाद हैं?

संपादक, हरिजन

बम्बअी, मद्रास, बंगाल आदि भारतके सभी प्रान्तोंकी सरकारें प्राथमिक टीका लगवानेके अनिवार्य कानूनको सार्वजनिक स्वास्थ्यकी रक्षाका बहाना लेकर रद करनेसे अिनकार करती हैं; अैसी हालतमें क्या हम सचमुच अपनेको आजाद कह सकते हैं? टीका लगानेकी अिस घिनौनी और हानिकर प्रथाको कानूनके जरिये अुन लोगोंके लिअे अनिवार्य बनाना, जो अुसे व्यर्थ मानकर अुससे बचना चाहते हैं, हमारी अुस स्वतंत्रताके खिलाफ है जो कि सन् १९४७ में भारतके संविधानने सारे भारतीयोंको दी है और हमारे लिअे जिसकी रक्षाकी अुसने जिम्मेवारी ली है।

प्रसिद्ध अमरीकी राष्ट्रपति लिंकनने कहा था: "मैं अपनी भूलोंको — यदि यह प्रमाणित कर दिया जाय कि वे भूलें ही हैं — सुधारनेकी कोशिश करूंगा और नये विचारोंको, ज्योंही यह मालूम होगा कि वे नये ही नहीं सच्चे विचार भी हैं त्योंही अपना लूंगा।"

सुप्रसिद्ध ब्रिटिश प्रोफेसर अे० आर० वालेस, ओ० अेम०, अेल-अेल० डी०, डी० सी० जेड, अेफ० आर० अेस०, कहते हैं: "टीका लगवानेको प्रोत्साहन देनेवाले और अुसका जबरन् पालन करवानेवाले सारे कानूनोंका रद किया जाना राजनैतिक पार्टियोंके किसी भी सिद्धान्त या कार्यक्रमसे कहीं ज्यादा तात्कालिक और बहुमूल्य महत्त्वकी चीज है।"

(अंग्रेजीसे) सोराबजी सिस्त्री

शब्दव्यूह और ज्योतिष

आधुनिक व्यापार-अुद्योग अेक अैसी चीज बन गया है कि न करने जैसे काम भी वह आदमीसे करवाता है। दूसरी दृष्टिसे अच्छे प्रामाणिक मालूम होनेवाले लोग भी मुनाफा, आमदनी या व्यापार-रोजगारकी बात आते ही बदल जाते हैं। वैसे भी व्यापारमें झूठके बिना काम नहीं चलता, यह अेक कहावत ही बन गअी है। अुसमें अर्वाचीन युगने अैसी बात जोड़ दी है, जिसकी वजहसे यह चीज और भी जटिल तथा अटपटी बन गअी है।

अुदाहरणके लिअे, अखबार चलाना जनताकी सेवाका अेक काम माना जाता है। लेकिन वह धन्धा भी है। और अैसा धन्धा कि अुसे चलानेके लिअे जिन चीजोंमें हमारा विश्वास नहीं होता अुनका विज्ञापन लेनेमें भी कोअी हर्ज नहीं माना जाता! यह धन्धा अैसा हो गया है कि विज्ञापनके बिना चल ही नहीं सकता। और विज्ञापन आजके व्यापार-अुद्योगका अनिवार्य साधन माना जाता है। विज्ञापनकी विद्याका विकास किया गया है, जिसका सार यही है कि किसी भी तरह ग्राहकोंको अुल्टी-सीधी पट्टी पढ़ाकर अपना माल बेच खाना। अखबार अुसके वाहन बनकर खुद भी खूब नफा कमाते हैं।

अिसके अलावा, दूसरे दो साधन भी अखबारोंने खड़े किये हैं। अेक है शब्दव्यूह और दूसरा ज्योतिष। मेहनत किये बिना मालामाल हो जानेकी लोगोंकी अुत्कट लालसाका लाभ अुठाकर ये दो युक्तियां आजमाअी जाती हैं। आर्थिक तंगी और बेकारीके जमानेमें अिन युक्तियोंकी सफलताके लिअे लोगोंमें अनुकूल भूमिका तैयार मिलती है। अिसमें शिक्षित और अशिक्षितका कोअी भेद नहीं रहता। शायद शिक्षित लोग अिसके जालमें पहले फंसते मालूम होते हैं!

शब्दव्यूहसे होनेवाली हानि आज काफी स्पष्ट हो गअी है। अुसके विरुद्ध लोगोंका प्रकोप जाग अुठा है। अिसमें कैसी बरबादी होती होगी अिसकी अेक अन्दाज परसे भी कल्पना की जा सकती है। मान लीजिये कि अेक शब्दव्यूहके लिअे तीन लाखके अिनाम बांटनेकी घोषणा की गअी है। अगर यह अन्दाज लगायें कि पांचेक लाखके कूपन भरे जाने पर खर्च निकालकर तीन लाखके अिनाम बांटे जा सकते हैं, तो ये कूपन भरनेवालोंकी संख्या कितनी मानी जाय? अितनी बड़ी संख्यामें से अिनामकी आशा रखना कैसी मूर्खता और व्यर्थता है? लेकिन 'लाखों निराशाओंमें भी अमर आशा छिपी रहती है' वाली कहावत यहां भी लागू होती है!

अब ज्योतिषका विचार करें। अखबारोंमें राशिवार साप्ताहिक फलका पत्रक दिया जाता है। अेक राशिमें लाखों लोग हो सकते हैं; सबके लिअे वह पत्रक अेकसा ही फल कहे, अिसका अर्थ क्या? यह फल लिखनेवाले लोग भी अैसी भाषाका अुपयोग करते हैं, जिसका अर्थ वे ही जानें। लेकिन लोभी और महत्त्वाकांक्षी लोगोंकी ज्योतिष पर जो आस्था होती है, अुसका लाभ अुठाकर अखबार राशिफलके भी पृष्ठ भरते हैं और अुनकी अच्छी बिक्री हो जाती है। क्या अिस पर भी कर नहीं लगाया जाना चाहिये? काश प्रेस-कमीशनने अिस प्रश्न पर भी विचार किया होता।

शब्दव्यूहकी बला यहां तक बढ़ गअी है कि अुसके साक्षरी कामके लिअे मिलनेवाले पैसोंके लोभमें बड़े बड़े पंडित और प्रोफेसर भी पड़ गये हैं। अैसे भी दावे किये जाते हैं कि ये शब्दव्यूह बौद्धिक और साहित्यिक मनोरंजन प्रदान करते हैं। अिस कारणसे गुजरात युनिवर्सिटीकी सिनेटमें अिस सम्बन्धमें यह प्रस्ताव रखा गया था:

"गुजरात युनिवर्सिटीकी सिनेटकी यह सभा सारे सिनेट-सदस्योंसे, युनिवर्सिटीके समस्त अधिकारियोंसे तथा युनिवर्सिटीके साथ जुड़े हुअे महाविद्यालयों और युनिवर्सिटी द्वारा मान्य की हुअी विद्या-संस्थाओंके सारे आचार्यों और अध्यापकोंसे आग्रहपूर्वक अपील करती है कि वे शब्दरचना प्रतिस्पर्धाओंसे किसी भी प्रकारका प्रत्यक्ष या परोक्ष सम्बन्ध न रखें।"

शिक्षण, साहित्य और संस्कृति आदिका काम करनेवाली संस्था अैसा नहीं कर सकती, यह नहीं कहा जा सकता। परन्तु युनिवर्सिटीका यह विषय नहीं, अिस बहानेसे यह प्रस्ताव रद्द मान लिया गया। अिस तरह अिस प्रश्नको टाला न गया होता तो अच्छा होता। अगर शब्दव्यूहका विषय गुजरातके शिक्षण-जीवनको स्पर्श करनेवाला न होता, तो अुसमें अध्यापकोंको क्यों लिया जाता? वे अैसा दावा भी तो नहीं करते कि शब्दव्यूह बुद्धिकी कसरत और साहित्यिक मनोरंजन है। प्रस्ताव सिनेटमें आया, यही अुसकी काफी टीका मानी जानी चाहिये।

शब्दव्यूहके बारेमें मेरे पास अनेक पत्र आते हैं। अेक भाअी लिखते हैं, बम्बअीका अेक अखबार लगातार तीन सालसे घाटा अुठाकर भी लोगोंको व्यूहका खेल खेलाता है! वे भाअी पूछते हैं, क्या घाटा अुठाकर अैसा करना ट्रस्टका धर्म हो सकता है?

दूसरे अेक पत्रलेखकने कुछ सूचनाअें की हैं, जो ध्यान देने लायक हैं:

"जो अखबार शब्दरचनाकी प्रतिस्पर्धामें पड़े हों, अुनका संपूर्ण बहिष्कार करनेका जनताको आदेश दिया जाय। अुन्हें विज्ञापन न दिये जायं और ग्राहक बनकर अुन्हें आश्रय न दिया जाय।

"कांग्रेसके सहारे 'जन्मभूमि', 'प्रताप', 'सन्देश' वगैरा अखबारोंने काफी प्रगति की है। अब अुन्हें शब्द-रचनाकी प्रतिस्पर्धा पर ही जीने दिया जाय। कांग्रेसका अुन्हें जो कुछ सहारा हो, वह वापिस ले लिया जाय।

"सरकारका कहना है कि अिस सम्बन्धमें कानून बनानेमें अेक वर्ष लगेगा। लेकिन अितने समयमें तो जनताके करोड़ों रुपये अिसमें स्वाहा हो जायंगे। जिम्मेदार नेता और कार्यकर्ता अेक साल तक चुपचाप बैठे नहीं रह सकते। अुन्हें अिसके खिलाफ अेक महान आन्दोलन खड़ा करना चाहिये।

"शब्दरचना प्रतिस्पर्धाके प्रयोजक विद्वानोंका सामाजिक बहिष्कार किया जाय।"

शब्दव्यूहके लिअे लोगोंमें कैसा अुग्र विरोध है, वह भी अिन सूचनाओंसे मालूम होता है। जो अखबार शब्दव्यूह चलाते हैं, अुनके संचालक जल्दीसे जल्दी जनताको अिसका अुत्तर दें कि अितना अुग्र विरोध होते हुअे भी वे किस लोकहितके खातिर शब्दव्यूहसे चिपटे हुअे हैं? व्यापारके लिअे भी अमुक नैतिक मर्यादा तो होनी ही चाहिये। लोकमानसको पतनकी ओर ले जानेवाले साधनों द्वारा भी व्यापार चलानेकी नीति अखबारोंको शोभा देनेवाली नहीं मानी जा सकती।

९-४-'५५ **मगनभाई देसाई**
(गुजरातीसे)

विषय-सूची **पृष्ठ**

आअिन्स्टीन	मगनभाई देसाई	६५
माध्यमिक शिक्षा	मगनभाई देसाई	६६
अ० भा० सर्व-सेवा-संघका बेदखली संबंधी प्रस्ताव		६७
लोकशाही और पक्षपद्धति	मगनभाई देसाई	६८
पुरी सर्वोदय सम्मेलन	सुरेश रामभाअी	६९
शब्दव्यूह और ज्योतिष	मगनभाई देसाई	७२
टिप्पणी:		
क्या हम आजाद हैं?	सोराबजी मिस्त्री	७१